

अध्यात्म रामायण ADHYĀTMA RĀMĀYA NA
DPN 7000

Title :

Run. No. 7725

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Story*.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 27 x 11

Folios 18 Lines (in a page) 9

missing 15-16, 20-41

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Beg. श्री गरुडेशाय नमः ॥

लीला गलबुल्लोल काल व्यास विलासिनः

P. T. O.

गणेशाय नमो नित्य कमला मलकान्तये ॥

सत्य लोकमहा ब्रह्मणे बडो साभा बनार्ई सृष्टि गर्भा
नि(मि)त्र परब्रह्मा रामचन्द्रको ध्यान गादेव रक्षाका ज्योत्सामा ॥

इति श्री अध्यात्म रामायणे बालकाण्डे प्रथमोऽध्यायः ॥

इति श्री अध्यात्म रामायणे उमानन्देश्वर संवादे बालकाण्डे द्वितीय सर्गः

इति श्री बालकाण्डे तृतीय सर्गः ॥

इति श्री मद ध्यात्म रामायणे बालकाण्डे चतुर्थ सर्गः ।

20

15

10

5

0 ctms.

5

10

15

20

25

30

35



२
 जेवाछाग न्यालाई पुत्रहुना न मोक्षावाछाग एणीलाई मोक्षहोला फेरि गोहत्या वालहत्या ब्रह्महत्या का
 चनहरण ब्रह्महरण एला आदि नाना पातक गन्या कायनि मृक्त होला फेरी नाना भय शिथिका भय रोग
 कामय दैव कामय जलमृत्यु कामय एला भय नाश दुःख एला अध्यात्म रामायन का कुरा म केला शयव
 त गयार जगदीश्वर महोदेका मुख कमल देखि मैले मुन्या कोम कहं छुति मि एका यारि गरि सुन मणी वृद्धा
 ले नारद छेउ म न्या कैलाश पर्वत महो जगदीश्वर श्री महोदेव ले राम चन्द्र को ध्यान गरि वस्या कावेला
 माया वेतिले महो भक्त भई श्री महोदेव छेउ विनि गरि न्या ॥ पावतु वाचा ॥ हे परमेश्वर महोदेव प्रभु
 तयात्रिका चरणमा कोटिर नमस्कार छ तयात्रिका म न्या जगत संसार का गुरु म ईश्वर का तला
 तयात्रिका म पिपा रिजति मया तयात्रिका उ कहि कथा हा विनि गरि छु मो स्वामि नमचुरो मया यनि म
 कहनु हवस मो स्वामि जल महो रयोगि दुहू न कहनु कुरो पनि आ फ्राम क्त जन कन न्यून
 ३
 न्या न कहन्या कुरो सब कहं छु त छि मंली जाति छु त पनि तयात्रिका भक्त छु त

१
 विनि गरि कुरा तयात्रिके ल्या सा गर्नु हवस मो स्वामि तयात्रिके रात दिने ध्यान यथा निर्दि
 व मो सरु पराम चन्द्र का कुरा आ सा गर्नु हवस जस का कुरा ले तयात्रिका ज राम न्या उ नि न
 न्या न्या न कहला ई रहनु मया को छ त सै मैले परब्रह्म राम चन्द्र का महिमा का कुरा सुनि म
 आत्मा लाई हितार्थ हुन्या साधिक नम न्युक न जि तुला मनि हे स्वामि कस लोक ले राम चन्द्र निरा
 कार ब्रह्मा माने माया मानि मया का छ न मनि म न्यून फेरि को हिलो कले राम चन्द्र निरा का
 वृत्ता होई न मनि मा छ न का हो म न्या ब्रह्मा भयाने मिक सो गरि माया का वस्या मया मया
 का वस्या पये मया मया कानशी ता का नि त शो क ग न्या मया मया ईश्वर हु मनि क शो गरि जान्या न
 य्या अ की ले न बुझाई राम चन्द्र के हि जा दे न य्या तस्कारण श्री राम चन्द्र जू माया का वश्य छ न मनि
 म छ न मो स्वामि तस्त्री मि त मेरा चित्त मा वगे संदेह म ईश्वर छ यो संदेह तयात्रिके ले मे दि दिनु हवस

20

३

भनि एषकारलेयावतिकावचनशुनि जगदिश्वरमहोदेव आज्ञागर्दीभया ॥ श्रीमहोदे उवाच
 ॥ हेयावति धन्य रम्य निमित्तो रामजू कस्तो हं नम्या दृष्टिकायनि अगोचरभया कासायाका
 यनि अगोचरभयाका ज्ञानलेमात्रैगम्यभयाका यस्ता परमात्मा स्वरूप भयाका एस्ता परमात्मा स्वरूप
 परामजूका चरणमा कोटिकोटिनमस्कार मेरो छे हेयावति तिमिपनि नमस्कार गर रामचंद्रक
 स्ताभन्या दुष्ट संहार गर्न्या साधुको रक्षा गर्न्या सबै धानिका आत्मा भै पाप पुण्य का साहि मेर सा
 का एस्ता रामजूको महिमा मकहंछु सुन हेयावति ३ परमेश्वर रामचंद्रलंका जाई रावनादि समस्त रोक्ष
 समारे अनुयायि री आर् अयुधामाराज्या भिषे कलि ३ सिता सहित सुवर्नका सिंहासनमा आनन्द
 हृदा कावला मोहनुमान रामसिताका अछि वाट वस्येर हात जोरि जय गरिव त्याग्य क
 नम्या महो ज्ञानि रामजूकार सिताका वडा भक्त जो रामले आज्ञा भया के तयार भई रत्यन्या

६१

३

10

७

सीताको मैत्रै ध्यान गरि रत्यन्या एस्ता हनुमान रामजूका हजूरमा वसि कन हात जोरि रामसिता
 क वर वद सलहे री वस्या हेयावति ३ हनुमान क्यानित्त एस्तो गरिव त्याग्य भन्या राज्य मागुं लाभ
 पाई नै धन मागुं लाभ निषनि होई न कया हा भन्या तुलो ज्ञा रा पाप्मि मे मोक्ष हो लाभ निव त्याग्य
 हेयावति एस्तो गरिव त्याग्य का हनुमान लाई देव्यार रघुनाथ लेयनि सीता छे उआज्ञा गर्न्या ॥ श्री
 रामचंद्र उवाचा ॥ भोसिते ३ हनुमान तम्रापनि मेरायनि वडा सेवक मक्ते छुन तम्रापनि मेरोयनि वि
 त्त जात्रा निमित्त ३ छा गरिव सि रत्या छुन तसर्थ तम्रो मेरो चरित्र तिमिकहि दे उभनि एस्तकार
 ले रामचंद्रले आज्ञा भयाको शुनि सिता हनुमान छे उआज्ञा गर्दि भईन ॥ सीता उवाच ॥
 हनुमान तिमिले वाछा गर्न्या को कुरो कहंछु कया हा भन्या परमेश्वर भक्त को वश हुनाले तसर्थ
 मकहंछु सुन हे हनुमान रामजू कस्तो हं नम्या जगत्ससार को गुरु जगद्धायि मकस्ति ह
 भन्या मूल प्रकृति बलले मलाई छेपिने ले समस्त सृष्टी गुरु जगत्ससारको गुरु जगत्ससारको गुरु

इति नृगन मेरासरिरदेखि बाहिर निस्कार रजगुन बल्लामे तृष्टि गर्ह सत्व गुण विष्णु ने पात ना
 तमोगुणामहो देवमै संहार गर्ह नृ अजु ध्यान गरी मादसरथ राजा का घरमा अवतार भया तस्वला मा
 विश्वामित्र सविले रामे वडलाई उाकिले जाई विश्वामित्र ऋषिको यज्ञा विघ्न गन्यो राक्षस कन माहिय
 सतिष्ठ गराया फेरि गौतम का आश्रम माहा आयले अहल्य सिला भैरवा की तन्त्र न आय मुक्त ग
 राई जनक राजा का घर पुगि धनु खन गति पलाई विवोहा गरि पशु राम को अकारव साई अयो
 ध्यान गर आई मसक्ति मसहित वारव वसि दण्डकारण्य गमना गरि विरोध गेलाई मारी रावण का अ
 ताले नारि वदे तथुन को मर्म भै आया को तस्कन मारि फेरि मैले अक्रामाया कि सीता वनाई मण्डा यिम
 माया कि सीता रावन ले चोरि लाजा मानस्कारणमा जटायु गर्व रा जाले युद्ध गरि मरी लाया
 नृ अहो मुक्त गरि ताहो पछि कवंच रा मेस को आय मुक्त गरि सवरि मा निनी लाई दर्शन दि सुयी
 मित्या लाई किस्का ध्यान गरि जाई वालि लाई मारि किस्का माहा शुभ्र वला गज्या भिषक दिई ना

नृ कवानर साहाय गरि योजन पठाई ममुद्र पार माया कि सीता दम्या जा नि समुद्र महां सा
 मुद्र पार मै राम लक्ष्मी मणवानर सहित रावण सग युद्ध गरि रावण दिस वै कन मारी
 नृ कान्हा भिविधि लाई राज्या भिये क मसहित मै पुष्य विमान मा चढि अयोधे आई राज्या
 भिये कलिया इत्यादि कर्म मैले गराया काहुन एस्तो राम ज्यु परब्रह्मा हुन भनि तिमि जान ई को ध्यान वाहि
 क अर्की को ध्यान नगर भनि आज्ञा गरि नेह नू मान राम नाम कस्तो भन्या संसार को भय ना सग नी निमि
 त्त का खड्ग हुन तसर्थ राम नाम को रड्गुति मि कै लेन छोउ संकष्ट भय जो निभय तिमि कन कै लेह
 वै न माया लेप निति मि कन छुन स कै न भनि हनुमान छे उ सीता ले आज्ञा गया का कुरा महां दे
 व पार्वती छे उ मच्छुन ॥ श्री माहो दे उवाच ॥ हे पार्वती इति भया पछि लक्ष्मि स्वरूप सीता ले हनुमान व
 न उ पदेशा दे हनुमान अत्यंत हर्ष मान मै राम सिता का चरणमा दण्डवत् गरी सीता को आज्ञा मानि राम

५
 २०
 १५
 १०
 ५
 ०
 राम आकाहृदय माराधि जान न्दमैर ह्यो ह्यो वति र ह्यो राम वन्दु माया ले छु न स कै न न जो पा
 नि हू माया का वसर ह्यो का जान न भया का ति न हू मात्रै राम जू व नै वा श गया सी ता नि
 मि त्त शो क गया मं न्छु न यो स वै माया मात्रै हो जो जानि जन छु न उ न हू मात्रै राम निरा
 कार निरंजन भनि जा न्द छु न ह्यो वति राम वंदु का चरित्र क सै ले य नि जा त्र शो कै न न
 अया र म हि मा छु मै ले य नि राम वंदु को म हि मा जा त्र श का को छे न सै छे य मा त्र मै ले ति मि ला ई क स्यो
 राम वंदु माया का शरीर भनि ति मी ले सं दे ह रा पु य दै न सा क्षा न्तर व ह्मा हु न ह्यो वती ज स्यो अध्या
 ॥ १ ॥ य रा का क था सु न ला ज स्ये रा म सी ता का च र ण मा भ क्ति ला ई प वि त्र मै सु न ला त्यो ई ह ले
 ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

तुलो
 २८
 वति ला ई क स्यो को व ह्मा लो क मा व ह्मा ले नार द मु नि ला ई क स्यो का ई कुरा ने मि थार ण मा सू त ले
 ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥
 ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ ॥ १०५ ॥ ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥ ॥ १११ ॥ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ ॥ १२० ॥ ॥ १२१ ॥ ॥ १२२ ॥ ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ १२९ ॥ ॥ १३० ॥ ॥ १३१ ॥ ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ ॥ १३४ ॥ ॥ १३५ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥ ॥ १५१ ॥ ॥ १५२ ॥ ॥ १५३ ॥ ॥ १५४ ॥ ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १७० ॥ ॥ १७१ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७३ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७५ ॥ ॥ १७६ ॥ ॥ १७७ ॥ ॥ १७८ ॥ ॥ १७९ ॥ ॥ १८० ॥ ॥ १८१ ॥ ॥ १८२ ॥ ॥ १८३ ॥ ॥ १८४ ॥ ॥ १८५ ॥ ॥ १८६ ॥ ॥ १८७ ॥ ॥ १८८ ॥ ॥ १८९ ॥ ॥ १९० ॥ ॥ १९१ ॥ ॥ १९२ ॥ ॥ १९३ ॥ ॥ १९४ ॥ ॥ १९५ ॥ ॥ १९६ ॥ ॥ १९७ ॥ ॥ १९८ ॥ ॥ १९९ ॥ ॥ २०० ॥

स्वाकोषियो. त्पोरावणाले. प. ध्वीमा. तुलो. दु. खदियो. स्वर्गमापनी. दु. खदियो. दशदिग्यालाको. अधिकारप
निलिई. अमरावतिजितिजवत्रहादिवंभिरवानाहलिअनेकै. ब्राह्मणह. रुकणा. दु. खदिदोभयो. तस्वेलामा
प. ध्वले. भारावोकननसकि. गाईकोरूपधारी. ब्रह्मलोकगई. ब्रह्मा. ध्वौ. आपु. दु. खवृतांतसवैरोईकन. विनि
गरीर. र. ईन. प. ध्वीले. विनिगन्याकोमुनि. ब्रह्मालेमनमहां. चित्ता. उं. नागरी. एस्यापिथरावणालाईमैले. तुलो. वदि
राध्या. छु. तसर्थ. ए. सरावणालाई. विष्णुवाहिक. अरुले. मार्नसकन्याछै. नन. भनि. चित्तमा. उ. ह्या. ई. देवलोक
सवैला. डाकि. प. ध्वी. सहितगरी. ब्रह्मा. क्षीरसमुद्र. जांदा. भया. आदि. नारायण. पुरुषोत्तम. विष्णुकन. जाना. प्रकारका
स्फुतिग. रि. अनेक. वेद. द्यो. सा. दि. गरि. ब्रह्माले. ब्रह्माले. ध्यान. गरि. वस्या. म्या. क्षीर. समुद्र. का. पूर्व. पट्टी. वा. ट. तुलो. जो
निए. क. सा. धि. आ. ई. तस्का. मा. रु. मा. पर. मे. श्वर. को. मु. र्ति. ब्रह्माले. दे. र्खा. क. रु. मा. पर. मे. श्वर. ला. ई. दे. र्खा. भ. न्या. गरु. उ. मा. च. ड्ढा
का. ग. मा. ग. ला. क्षी. सहित. भ. का. च. तु. र्भु. ज. भ. या. का. दा. ख. च. क्र. ग. दा. य. ध. र. रा. ग. ग. या. का. अ. न्यं. त. सु. द. र. मु. र्ति
य. त्र. ज. ल. त्र. या. म. या. का. नी. ल. मु. णि. को. व. र्ण. भ. या. का. प. हे. ला. पा. ट. को. धौ. ति. भ. या. का. रु. स्यें. दो. मुख. भ. या. का.

अविज्ञमयाका अत्यंतशोभायमानभयीविराजतामयाका सर्वगता सुवर्णका गरुणालाई र
 याका आनन्दस्वरूपभैरवाका एस्ता परमेश्वर आदिपुरुषोत्तम नारायण देखि बुझाले भावले सोमां
 ५३ जुद्धवानिले ल्पति गद्दी भया ॥ ॥ बुझो वाच ॥ हे परमेश्वर नारायण तपाजिका चरणमा कोटि रत्न
 मल्लकार तपाजिकला भन्या जगत्संसारका आत्मा पुरुष आधार पति तपांजि दुःखदेखि पार गन्थी पति
 तपाजि हे परमेश्वर मेरो गति यति तपाजि मेरो नमि मिति नमि कति सकल दुलो भय न्याई लाग्यो एस्तो भय
 नाश गन्थी अर्को छैन तपाजि वाहिके मेरो आधार पति अर्को छैन तसर्थ तपाजिले यो भय नाश गर ईदि
 या जाव सम्भनि एस्पुकारले बुझा को वचन सुनि परमेश्वर नारायण आज्ञा गद्दी भया ॥ ॥ श्री भगवानु
 वाच ॥ हे बुझा का हांवाट तपांजि लाई भय आयो मैले क्वा गर्नु ययो आज्ञा गर्नु ययो भनि एस्पुकारले भक्त
 वत्सल नारायणको आज्ञा सुनि बुझाले फेरि विनि गद्दी भया ॥ ॥ बुझो वाच ॥ हे परमेश्वर मकरा आया
 को भय पापिष्ठ रावण देखि हो अणो कज्जु धिलोक वासना लोक मुनि गण हरुले यज्ञतप ध्यान गद्दीत

5

10

15

20

25

30

20

राम ७

सपापिच्छले दुषदियर डैरै विघ्न गरि पाममयच्छिभई यज्ञादिकर्मपनिके हिरण्यनन देवलोके
 देव लोक सवै भोकार ह्या देवता हरू को सवै अधिकार न स्ले हरण गरी पापमय छी भई भाराले स
 हनन सकि रोई मछ्यो ज्यो ई न ई न लाई हेनु हवस् भनि हे परमेश्वर ममूर्ख भै मैले तसपापिच्छरा उगलाई
 ठलो वल प्रशाद दी राव्या को छ क्यावल भन्या मनुष्य बाहिक अरु कसै लेखि पनि मृत्यु हवैन भनि मैले व
 ले दिया को छ तसर्थ हे परमेश्वर जपो जिले छी मंडमा अवतार लि न सपापिच्छरा वरात्रि भूवरा को कं
 टक तस्कं टक कन छुटाई न्योपाधिक न मारि नि कं टक गरीव जया नु हवस् भनी ए स्य कारले बुझाले वि
 निगन्या को सुनि परमेश्वर एरा एरा आज्ञा गदी भया ॥ श्री गारायन उवाचा ॥ हे बुझा अवस्य त म्मा आ
 जाले मनुष्य अवतार भई रावरा दिज नि दुख छन उति कन संसार गरुला भनि हे बुझा दोश्र्युका
 रले पनि मैले मनुष्य अवतार हुनु पर्नो छ कयानि तले भन्या कशो भन्या अधिका कालमा वस्यर अदिति
 ले मेरो वडो तयस्यागन्या को छ कयानि मित्र ले भन्या तपा जिले मेरा छोरा हुनु हवस् भनि मछ्यो ना

गुरु ७

15

पि

10

२५

र मैले तथामु भनि वप्रसाद दिया को निकस्य अयोध्यानगर का सूर्यवंशि का कुलमा दशर
 थ जन्म लि वसिर ह्या छन उ अदिति दशरथ कि स्त्रि को शाला भई जन्म लि राखी छन हे व
 ह्मा ए स्त्री मित्र ई न देखि मैले जन्म लि नुछ एक ज्यात्मा को चार भई राम लक्ष्मण भरथ शत्रुघ्न
 करुलाई मजन्म लि उला फेरि मेरि योगमाया जनक राजा छौ सिता करुलाई अवतार लि नपठाउं
 ला न सिता वि कारण तु ल्याई रावरा दि पर्थि विमा जति पाछि छन उति संसार गरि दि उला नि
 श्रय भयो भनि तपो त्रि हरू ले पनि वानर रूप अवतार लि मलाई वल दिनु चाहि छ ज्याया का ठाउं
 मा निश्चीत गरि फिर्नु हवस् भनि ए स्य कारले बुझा करण आज्ञा गरि परमेश्वर न्यून न हुदा भया
 ॥ श्री महादे उवाचा ॥ हे पार्वति परमेश्वर कोर बुझा को संवाद भया का वेलामा देवता हरूले कसै ले प
 नि देखे न नारायन को दर्शन कसै ले पनि पाएन बुझाले मात्रै दर्शन पाई डैरै भूमि फि रि आ

5

मोहाद

रामा
८

ई बुद्धाले विष्णुले आज्ञागया का कुराव त्तान्त सवै देवता हरू कामुख्यां जि आज्ञागदी भया ॥
बुद्धोवाच ॥ हे देव लोक परमेश्वर रागारायण पृथ्वी मा मनुष्य अवतार हुन्या छन् अवति मिहा
मिसवैले पृथ्वी मा अवतार भयी रामको सहाय गरि वल दिनु पयो न्त सर्थ वानर भई अवता
र हुनु पयो भ भिय पृथ्वी मा अवतार भया जे ती स ३३०००००० कोटि देवता हरू वारा भई ठाउँ ठा
उँ मा वास गरि महारवल वत्त भई र ह्या कावेला मा कखेला मा राम संग भेट होला भनि आशा गरि
र ह्या रुपार्वति परमेश्वर रघुनाथ को महिमा सुनो हो भनि कैलास परवत मा म हा देवले पार्वति
कनक ह्या का कुरा बुद्धाले लोक मा बुद्धाले नारद ह्यो क ह्या का नै मिथारण्य मा सूत ले शौन का
दिका कया ॥ ॥ इति श्री अध्यात्म रामाई ने उमा महेश्वर संम्पादेवाल काणे उद्दितीयः सर्गः २ ॥
॥ श्रीमह दे उवाच ॥ हे पार्वति अयोध्या का राजा दशरथ का स्त्री कौशल्या के कैया तु मित्रा इति

गुरु
८

आ

नगः महा उतिवता स्वामि भक्त धिया दशरथ राजा कस्तुथिया भन्या महा प्रताप वनुर्दश
विद्या संपूर्ण भया का सत्यवादि अशक्त कहेला भया का देव बाल रा का भक्त दया शिल न्या यनि
तिले पजा कनया लना गदी एला दशरथ का सता भये नर वडा दुःख ले प्रापु रोहित वशिष्ठ छे
उजाई वशिष्ठ का चरणा मा पाहोई विनिगदी भया ॥ ॥ दशरथ उवाच ॥ हे गुरु वशिष्ठ एस
राज्य मा राजा भई कए क्य प्रयोजन क्य सुख भनि धिक्कार जन्त मेरो पुत्र भये नन् भनि भोगु
पुत्र को मुख हेरि बद्ध पाया यो सुख भनु न्त सर्थ पुत्र विना यो राज्या ले सुख छैन एस प्रकार ले संता
न निमित्त दशरथ राजा ले महा शोक गन्या को देखि भूत भविष्य जानि र ह्या का वशिष्ठ आज्ञा गदी
भया ॥ ॥ वशिष्ठोवाच ॥ हे महाराज तपो जिते शोक गर्नु पर्दै न तपो जिते लाई पुत्र अवर्य हुन्या छ
न् भन्या कस्तु पुत्र भन्या बल महा जे ज महा रागाराय न तुल्य एला छोरा चारा तपो जिते लाई हुन्या छन् हे

२०
 २ महाराज तसर्थ जज्ञ गर्नु चाहिं छु विनाय ज्ञले सुख पां जि देन हे महाराज अथ अंगर शोत्र ईद
 ईकन बोलायी छोरा हुन्या यज्ञगरा उर जव पुत्र हुनान भनि एस्य कारले विशिष्य को आज्ञा सुनि
 दशरथ राजा महाबुद्धि भई तसै वेला मास मंत्र मंत्रिकन डाकन पठायी सवै चाहि न्यासरो जासत
 यार गरिव शिष्य आदि अने कै वास्तु एवालाई ठुलो जज्ञ गदी भया तन हस्त ले विधि पूर्वक ले यज्ञ ग
 रि यज्ञ संपूर्ण हुंदा ताहां अग्नि संतोष भई सुवर्ण काय लिया माछिर हाति जा ज्वल्य मान भई अग्नी
 कुंडल वाट माथि अर्ध्या ज्ञा गदी भया ॥ अग्रि हवाच ॥ हे महाराज दशरथ तपात्रि ले गराया
 काय ज्ञले मसंतोष भया अवत पात्रिको मनोरथ पूर्ण गरि कन दवलोक ले वताई राख्य को छिर मे
 नो ॥ अत्रो यो वस्तु लिन हव सुभनी दशरथ कन सुपि केर आज्ञा गदी भया हे दशरथ त्यो क्षिर
 १५
 तपात्रिको हस्त कन सुवा वनु हव सर तपात्रिको कामना पूर्ण होला फल मिलल भनि एस्तो

७२
 २

१०
 ७ आज्ञा गरि अग्नी अंतर्धान भई गया ताहा दशरथ ले पनि अग्रि ले दिया को सुवर्ण काया ले
 यमाग या को क्षिर समाति अत्यंत हर्ष सागा भयी अंतपुर जाई त्यो क्षिर दुई भाग गरि अर्ध भा
 ग के ॥ शल्य लाई दिया त्यो क्षिर खां उभन्या लेला मा सुमित्रा आई पुगि नर मंदी भई न हे दिदि
 हरु मलाई पनि संतान तुल्याउछु त्यो वस्तु अलिकति मलाई पनि देउ भनि नर को शल्या ले
 आफ्नो भाग आधा गरि सुमित्रा लाई दिइन् त्यो क्षिर के यी ले पनि आधा भाग आफ्नो भाग मा आ
 धा सुमित्रा लाई दिइन् र इति न गोठि ले क्षीर ज्यो गार गय ताहां दशरथ राजा ले पनि यज्ञ संपूर्ण
 गरि सवै वास्तु एवालाई हस्त कन पूजा गरि अने कै सुवर्ण वस्तु घन घरे ज्यो शल्या ति दान दिया ईच्छा
 भोजन गरायार ताहां वास्तु एवाला हस्त पनि संतोष भई दशरथ कन आशीर्वाद दिया आफ्नो घर जांदा भ
 याथ्या ॥ श्रीमहो देउवाच ॥ हे पार्वति दशरथ कास्त्री तिनै वटिका गर्भ अथ भई तिनै वटिकन

म

१०

१०

तुलोतेजवर्धिमहोत्सोभन्यादितिलेवायुदेवतागर्भरुद्रकावेलासहाजलोतेजदितिकोथियो
 तस्तेजकौशल्याकेकयीसुमित्राकनभयापक्षीजाहोदशरथराजालेचारमहिनादमहिना
 आठमहिनाकोगर्भकामगरायादशमाशपूरीभईकौशल्याकनपुत्रजन्मभयाचेत्रमाश
 कौशुस्यक्षनवमितिथिभलावेलामाजन्मभयोहेयार्वतिनिपरमेश्वरकस्यगरिजन्मभया
 भन्याचेतुर्भुजभईशखचक्रगदापद्मधारणागरिनीलवर्णकमलपत्रकाजस्ताआसाहृद
 येमाश्रीनैयिहृपीतांवरकोधोतिभयाकोसुवर्णीकाबुडातायाकाकाणमारत्नकुंडललायाकोहि
 रकोमकुटशिरमाकामदेवजस्तामहासुंदरदशहजारसूर्यकोतेजभयाकाएलातेजभईकनप
 निर्मातलभयाकारुस्यात्रिदोमुखभयाकाअनेकगहनावनमालालायाकाकन्तिहेदीपनिहेर्न
 नन्याईन्याईति सुंदरजस्तावैईकुठवाशिउत्तैईनकोमूर्तिभैकोशल्यादेखिजन्मभयातखेलासो

गुरु
१०

पृथ्वीमहोपरमेश्वरअवतारभयाभनिजानिदेवलोकहुरुतेस्वर्गमहाडुंडुभिवाद्यावजाईफेरिअ
 नेकपुष्पवृष्टिगयाफेरिरावणकाभयलेदुवतामनुष्यकनत्राहिभैरव्याकातनहूरुतवैकनआनन्द
 भयोब्राह्मणात्राधिलोकजयतपध्यानगर्भयोईरसाकाईनहूरुयनियजतपध्यानगर्भभयाचक्षत्रता
 रात्रहयतिकोपनितेजप्रकासमानभयोफेरिसमुद्रादित्युनकनदनदिकोजलयनिनिर्मलभयोह
 स्प्रकारलेतिनैभुवनकनमहोत्पानन्दभयोश्रौयोभनिहेयार्वतिकौशल्यायनिरुत्तमपरमेश्वरआ
 फुदेखिजन्मभयाकोदेवताहर्षशुपातगरिगद्गदवानिलेकृतिगर्दिभईन॥ ॥कौशल्यावाच॥
 हपरमेश्वरविश्ववरतपात्रिकाचरणमाहाकोटिशनमस्कारकस्तातपात्रिभन्याविश्वात्मासंसारका
 आत्मापुरुषपरब्रह्मकामूर्तिआत्माश्वरूपज्ञानश्वरूपयज्ञश्वरूपफेरिधाताविधाताव्यक्तअव्याक्त
 ज्ञानविज्ञानईदितपात्रिहोव्योमकेशविराटमूर्तिपनितात्रिहोमहोश्वरूपसत्तोगुणरजोगुण

राम
११

तमोगुणपति तपात्रिदेवि उच्यते भै सत्वगुणादिति न गुणलेन तपात्रि लाई छुदै न फेरि समस्त प्रा
णिकन वैतन्य तुल्यार्थानिका हृदय कमल माहों विराजमान भई पाप पुन्य का सा छि भैर स्या का पनी
तिमिहो फेरि तपात्रिको मनुष्य को कोहि छैन सदैव प्राणिक एका एके ना सदैव सवै का प्राण
पुरुष भैर स्या का एसा तपात्रिम छै छन भनि कोहि जांदन न जाम हां जानी छन उन हूमात्रे आफु
छै उछन जाय छन एसा करुणा निधित पात्रि फेरि कस्ता तपात्रि भन्या यो ब्राह्मण स छि धारणा
गिरि स्या का एसा तपात्रिको शल्या का गर्भ मा जन्म भयापनि लोक हस्ता उनु निमित्त तपात्रिम
छै उ जन्म लिनु भयो हे परमेश्वर सकल भन्या निर्गति मनुष्य जाति एस्तिकन पात्रिले दर्शन वक
सनु भयो फेरी कौशल्या कानन्दन करुलाई जन्मनु भयो न सर्थ धन्य रमेरो भाग्य मेरो जन्म तार्थ भयो
फेरि एसा तपात्रिकुल पनि धन्य र हे परमेश्वर सस्त्री जात जान हि न भया कि तपात्रिको हस्त निम कया ग

७८
११

४३

पात्रिका वरणा कमल माहों कोटि रनमस्कार हे कया सागर तपात्रिको तप स्य मेरा ह
दय मा कै छैन हरावस् फेरि तपात्रिको ध्यान मेरा हृदय कमल मा सधों राख्नुं परमेश्वर अ
वत पात्रिले तोरुप न राख्नु वस् जहने मनुष्य को माया शरिर छ तहने अज्ञान बाल स्य मेर हुनु
हवस् भनि एस्प कारले कौशल्या का वचन सुनि परमेश्वर गाराय ग आज्ञा ग दी भया ॥ श्री
भगवानुवाचा हे माता कौशल्या अधि तपात्रिले मेरो ठूलो न पश्या ग न्या थें कया ह भन्या मेरा गर्भ
मा वाश गरि म देखि जन्मनु चाहिन्छ भनि वर मा ग्या थें र मैले तया ल भनि कन तपात्रि लाई वर प्र
साद दिया को थियो तसर्थ तपात्रिले उ जन्म लिन न्या जा हे म हतारि कौशल्या छ्छी को भारा क
दन निमित्त म न्यवतार भन्ना तसर्थ तपात्रिले ई कुरा अ की कन आज्ञा गर्नु चाहिदै न फेरि मेरा नि
मित्त शोक गर्नु पनि चाहिदै न शोक ग न्या पनि पोरि पं वले पत्थार फु न्या अर्थ मात्रे गर्नु हवस् हे म ह

राम

१२

तारिकौशल्य तयाजिले मछे उजतिमा सुभयो य्यो उतिमैले दिशक्या तयात्रिका हृदयमा योसेरो
 मूर्ति कैले यनिहरावेन फेरितयात्रिका शरीरमा पापले छोवेन अंतकालमा परमपद गति म दिउंला
 भनि एति आज गरि परमेश्वर गारायण भर्वर जन्मया का काल खरु भई रोईर स्यानि श्री महादेवले आज्ञा
 गन्या हे यति इति मया पछि कै कै देयि यनि एक पुत्र जन्म भया सुमित्रा देखि यनि दुई पुत्र जन्म भया
 तसेला मा दशरथले खवर सुनि महारुखि मैन भई अनेक दान पुन्या गन्या अनेक दान पुन्या गन्या
 गराया चार पुत्र को मुख हरि र स्या कला पुत्र हरु भन्या साक्षात् गारायण का तेज देखि उन्नत भया का
 ला छोरा हरु को मुख देखि दशरथ महान्द भै वशिष्ठ मुनिक ता बोला अनुपठार्ह राम करण गरा
 या ॥ वशिष्ठ वाचा ॥ हे महाराज दशरथ तयात्रिका ज्येष्ठा छोरा महाराज विराज राज राजेश्वर हुन्या
 यो संसार का सबै प्राणिक नरक्षा गन्या छन तसर्थ इन को नाम राम चंद्र भन्या फेरि र कोना त भर्

म३

७५

१२

तले सबै भारा वो कनान तसर्थ तन को नाम भरत फेरि एका को नाम लक्ष्मण भन्या सबै लक्षण
 संयुक्त भया का फेरि समस्त शत्रु को नाश गर्ज शकनान तसर्थ एका को नाम शत्रुघ्न भन्या हे महा
 राज दशरथ ईश्वर तले पथि वि को रक्षा गर्ज शकनान भनि एस्प कारले नाम करण गराई शास्त्री
 कृत जात कर्म दिग राई दशरथ राजा अत्यंत सुसि भई कोटि र गाई कोटि र सुवर्ण कोटि र घोडा कपरा घ
 रषत आदि वास्तु का दान दी ईच्छा भोजन गराई आनन्द स गराया आफु पनि आनन्द मय नैव
 स्यामनि श्री महादेवले आज्ञा गन्या हे यावेति एति मया पछि राम लक्ष्मण भरथ शत्रुघ्न ई नरु र चार
 जाना क्रमले ठुला भयो खलु न जान्या भया राम चंद्र लक्ष्मण को अत्यंत पति भयो भरत र शत्रु
 घ्न को अत्यंत पति भयो राम को सेवा जति गर्नु लक्ष्मण गर्दा भया भरत को सेवा जति गर्नु शत्रुघ्न गर्दा
 भया कान एलो भयो भन्या कौशल्याले आफु भागमा आधा क्षिर सुमित्रा ला दिया को भागले ल

20

राम १३
 क्षमणभया केकयीले आक्राभागको आधासीरदियाको भागले शत्रुघनभया तस्कारणले राम
 रलक्ष्मण भरतर शत्रुघ्न अत्यंत मिल्पाका थिया भनि हे पावति ईश्वरै वालय जाना प्रकारले
 खल्दाभया फेरि नाता विद्या नानाशास्त्रा शवै जान्नाभया ईनरुको स्वरूप गुन देखि दशर
 थकामनमा परमानन्द को भयो भनि श्रीमहादेवले आज्ञा गयो हे पावती परमेश्वर जनमभयाको
 वेला मा कोशल्या संग संवाद भया का देवा के या हा जहले हृदय मा अक्षी राखि मुनस्म कहोस्
 ले विघर मारा दोस्ता प्र कोस्म ले विघर मा ग दोस्म सवैया पदे सि मुक्त मै मनुष्य अंत काल मा हा
 परम गति पावला भनि एस्पकारले कैलाश पर्वत मा श्रीमहादेव ले पावति कन आजाय्यो ॥ ॥
 इति श्री वालका रोड नृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥ ॥ वृत्तो वाद ॥ हे नारद अयुधामा राजदशरथले पुत्र
 ॥ क्षमण भरतर शत्रुघ्न ईनरुको मुख हेरि रानि कोशल्या आदिले न्यानन्द संग रदा न संवला

७८
 १३

10

आमित्रक्रात्रिले तपोवन मां यज्ञागिरि नृत्पाका ठाउँ मा अनेकै बाष्मण एरुले निम
 नेव जय तप गरि वस्या मा तां रावण का आज्ञा ले ताउकी भद्रिराक्षसि निले तिष्ठ राह रुहे
 यज्ञ मां अनेक उत्यात गरि दुःख दिदि भयित न व विद्या मित्र क्रम पि अयुधामां जाया राजा दश
 रथ छेउ पुगि आज्ञा गर्दी भया ॥ विष्णु मित्रै वाच ॥ हे महाराज दशरथ तपो जिछे उर उठा वस्त्र मा
 य भनि आंजंति राम लक्ष्मण दुई कुमार मलाई सो फुहवस्त्र भनि आज्ञा गयार तां दशरथ राजा
 ले चित्त आकुल गरि अहो ईवा ल गाले कला कुरा गयो एहा वाल बरु म कशो गरि दिउं नदिया
 ईश्वर दिना न अवक शो गन्यो हो भनि दशरथ राजा ले ठुलो संका गरी वस्या के वेला मा वसिष्ठ ऋषि श्व
 र आया का देखि राजा दशरथ ले पायार्थ गरि आसन मा विराजमान गराया तनले राजा दशरथ को
 चित्त आकुल भया को देखि वेशि ॥ आज्ञा गर्दी भया ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे महाराज तत्तो आ

१४ गह आकुलचित्तगरी कानरहनु भयो रमनिभन्यार दशरथ आजगदी भ॥ ॥ हवसिष्ट ऋषिश्चर ऋषिश्चर ले
 राम लक्ष्मण दुवै करामलाई सो पुहवस रमनिभन्यार मे राम नमा एसा बाल बहू कशोगरी सो पुंभनि से
 भई रह्ये एसा कुरा सुनि वसिष्ठ ले आजगदी भया ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे महाराज दशरथ एतनि
 मीत मां हो संदेह गर्नु चाहि दैन तपांजिको अधि प्राजन्म को कुरा कहन मय्यां नो सुचुहवस अने कै देव ह
 रुले जन्म लियार अने कै राक्षस हर ले जन्म लियार यथिले भार बो कनन सकिय थि बुझा कासा भासा
 गयी अने कै चित्त गरिकन आपु दुहा को बतान कहि रोई वस्य कि देखि बुझा आदि तेति मको दद गलोक ह
 रुने त ज्ञाह गरि बुझाले आजगदी भया ॥ ॥ हवलोक यथि बालाई मंगलि शीरस मुद्रजा विष्णु ले उ
 पूजा कति गरि तां परमेश्वर महां विष्णु ले देव लोक लाई बुझाई पठाया तने परमेश्वर तपांजि
 म नाम भई कोशल नन्दन कहलाई जन्म लिया परमेश्वर का हात मारया को शोध ले भरथ भई जन्म गह
 २३ परमेश्वर को शया अनंत मूर्ति ले लक्ष्मण भई जन्म लिया गह
 निहारे दशरथ

का २

उदा १

रामिनी ताल बछ ल्या जांजिय थि मा हां पतन मै ठुलो शरद गोरिक राई प्रा न छोत स्वेला
 माहा दिव्या स्थि एक तज ले संयुक्त नया कि राम वन्दु अदि वाट हात जोरि वसि त्यो राक्षसिनि
 पूर्व जन्म मा यक्ष कि श्री देवता को आपले यापिनी भैरव्या कि ते स्वेला मा राम का प्रशाद ले पाप दे
 ह छोडि दिव्य देह धारण गरि त्यो हं कि मंदी भई हे परमेश्वर राम वन्दु यो तो यो पापि यो जो नि
 माउ ना भै अने कया पगरि अने कबो मरा हं रुको जो ह गरी एच नमा डेरै काल भयो मवस्या को
 अवत पांजिका प्रशाद ले यो पाप देह मुक्त भयो मनी राम को कृति गरि तिन फरा पद क्षिणा गरि स्व
 र्ग जादि भै तां तो ताड कारा क्षसि नो मया पछि सवैत पसि ऋषि रुकन महां आनन्द भयो सवै को
 याज्ञा सिद्ध हु दो भयो तस्वेला मा विश्वामित्र पुमि भै राम लक्ष्मण बोलाई आफ्ना काष मारा थि बुवन ग
 रि आति गन गय्या धन्य राम भन्या तां हो विश्वामित्र ले अने कै शास्त्र सिकाई शास्त्र विद्या शिकाया

20

रामः नानाप्रकारकोशविद्याशिकायाकौनभन्याबुद्धशास्त्र ईडास्त्रवायव्यास्त्रायाशुयतास्त्ररस्त्रा
 १७ रदुर्लभविद्यारामलक्ष्मणालाईयाकलोविद्याभन्याछादशवर्षचतुर्दशवर्षनिराहाररक्षापनिचल
 हिननहुन्याएलोशस्त्रविद्याविश्वामित्रकाकपाले रामलक्ष्मणलेपायाभनिबुल्लालेछेउकह्याको
 सूतलेशौनकादिअधिकनकह्या ॥ ॥ इति श्रीमदव्यासारासायैरोवालकाणेउवतर्कसंग ॥ ४ ॥ ॥
 श्रीमहोदेउवावा ॥ हेपावति विश्वामित्रकाआश्रममहोमारिवभजुराक्षसएकमात्यभजुराक्षसएक ईदु
 लेसवैबल्लणहुरूकनदुखदिंथ्योदेवलोकलाईपनिअनेकदुखदिंथ्योएल्लमायात्मादुईराक्षसलेन
 स्याजलमहोदुखदिराव्याकोदेरिविरामलेआजागदीभयाहेविश्वामित्र ईराक्षसदुईतयाजिकाअश्रम
 महावडनारटकमईरह्याकाछनतयाजिकोआजाभयाईनहुरूलाईपनिमाहोईयाजामात्रैगईहु
 ३ ॥ ॥ भन्यारविश्वामित्रभरछनहेजकुमारहुंछलौभनिआजागरियजसालावनाउनला ॥ ॥

७५
 (१)

10

यज्ञाशोमाग्नितयारगरियजगर्नलाय्यारतोंहोयज्ञागन्याकोधुंवांआकाशमागयाकोरअ
 केधिउभिजाईयाहुतिदीयाकोगंधपाईतिराक्षसहुरूदुवैलेदेखियजमाहोविघ्नगर्नकनडा
 ईयायाविश्वामित्रसेछाअधिहुंनलेउरकानजिकजानैसकेनन्त्याकाशमावसिरक्तव
 यिगारायाहाउरछिगरायातिराक्षसदुईकामरुपिन्युनेकमायाजान्यातनलेविश्वामित्रअ
 धिकायजमहोयलोउत्पातगन्याकोत्योहरिरामचदुलेविश्वामित्रछेउआजागदीभयाहे
 अयेश्वरपायात्मातयाजिकाआश्रममहोकंएटकमईरह्याकाजोछनममारुलाभनिआजामा
 गिधनुयसमातिभन्दाभयात्योतिरकलोभन्याकालसर्पजलोयल्लादुईतिरलेमारिवभजुराक्ष
 सलाईपरागन्यातसवानकाप्रहारलेत्योमारिवराक्षसएकलायजोजनटाठापुगिलंका
 देशकाखावांपयातमापुगिमूर्छीगराईदाभयाफेरिअकीतिरलेमाह्यवावागभजुराक्षसला

राम १८ ईप्रहारगरितसैठांउमाभस्महुंदोभयोः ज्योदेखिसर्गमादेवलोकहुरुकनआनन्दभईअने
 कशुगंधपारिजातादिपूलवसीउंदाभयारामलक्ष्मणकाशिरमाहोएस्तोपुष्पवृष्टिगरिअ
 नेकदेवदुंडुभिवाद्यागयाअनेकअमरागंधरानित्यागदीभयासिद्धचारणगणलेपनिराम
 लक्ष्मणकोअनेकैस्तुतिपाठगयाअनेकअधिलेपनिरामकोजयहवसभनिआशिवाद
 गयाएखोप्रकारलेशवैलेश्रीरामचंद्रकोपूजागरितिनदिनतसैउत्साहगरिताहाविश्वामि
 त्रकोयज्ञसंपूर्णभैविश्वामित्रलेरामलक्ष्मणकोपराक्रमदेखितिकुमारदुंदुनैकारवमारखिआ
 लिंगनाचुंवनादिगरिअनेकैयाकिरह्याकावेशरफलमुल्ल्याईरामलक्ष्मणकनखिलाउंदा
 राआफुलेपनिरवाईआनन्दगरिवलाभयाताहोयछिविश्वामित्रलेआज्ञागयाहेरामअद
 ताहोनवसौमिथिरानगरजाउंभनिमिथीलादेशकाराजाजनकतत्तलेहुलोयज्ञआरंभ

२४
 १८

याश्रीमहांदेवकोधनुर्यागपूजाजह्लेयोधनुभांचनशकोतसुलाईउत्किछोरिसितादेवि
 विवाहागरिदिउंलाभनिरायाछनतपोत्रिकनदेखोउंलातिमिठलायराक्रमिरह्याछोभन्यामति
 मिलीसंगलैजांछुआवभनिरामलक्ष्मणलाईआकिविश्वामित्रलेतिशितारामचंद्रलाईविवाहा
 गर्नमनमाचित्ताईगंगाकातिरतिरैआईगौतमअधिकाआश्रममायुजिमसआश्रममाहोअनेकपु
 ष्यफलमुभईरह्याकोअतिसनोहरस्थानज्योहरिरामचंद्रलेआज्ञागयाजगछापिरामचंद्रलेआ
 फुलेजातिरआफ्रामायालेवालअवस्थालिकैहिजान्यारह्यनछनभन्याजस्तोपारिसोधनिग
 दाभयाहेविश्वामित्रयोअतिरम्यस्थानमनोहरभैरह्याकोवनभैकनयनिजीवाजंतुकोभयजाहो
 रह्यनछफेरिजाहिवसिरहुंभन्याजस्तोयोकसअधिकोआश्रमहोएसआश्रमकोवतानपूर्वको
 कथाहाकहुंछुसुनुहवसभन्यारएसआश्रममाहोअधिगौतमअधिवस्याकाथियातिगौत

१८ म महांते जस्विधिया तनूलाई ब्रह्मा किछोरि अहल्या दिया कि थिई नति अहल्या परम सुंदरी
 तनूले गौतम को सेवा गरी एम् ओम् मम हां वस्य क थिई नति तस्वे लामा देव राज ईदु आरि तिगो
 तम छे उ शास्त्र पढ़ि आउं थ्या कोहि दिन सा रास्त्र पढ़ा का वेला सा ति परम सुंदरि अहल्या लाई
 देखि कामवान ले पिआ गरिया य वित्त गरि ईदु को वित्त ति अहल्या छे उ जातो भयो कस वेला
 ति अहल्या संग प्रसंग गर्न पाई य ला भनि विवाग दो भयो कोहि दिन सा हां गौतम अशि विहा
 नै प्रात घन गर्न भनि गंगा का तिर गया तस्वे लामा त्यो कामा धईदु अशि न भया क विलासा
 आई गौतम को हय गरि अहल्या का आश्रम को ठा मागे ति अहल्या को प्रतिवृता धर्म रुक ई अ
 पुले दिना गरी राया पछि कोठा बाठ निस्कन वेला सा गौतम अशि जस्तो हय भै आया के गो
 लै देखि आश्रय मा नि भंदा मया यो कलो कौतुक एठाउं मा हां गौतम दुई र ह्या छे न दिने म

गयौ क्या मम जो राम ले तमो क्या अय राध गया तमो क्या आज माने न न केरि तिराम लाई
 कै गुण वरणी उता गरि हं न थ्यो केरि भरत शत्रु घन चाहि पनि राम चंद ले मेरो सेवा गछे न भ
 निस वै राम लाई प्रशंसा गये तमो छा छोरा चाहि पनि राम छे उ अति स्निह थियो अय ये सो
 नि छुर हृदये कलो हो कशो हो भनि भन्यार हरा नि अय कशो गरी तिमिले भन्या जस्तो राम
 लाई दिन तयार गरि राया को सारा जाम ले तमो छा छोरा भरत कन राज्या भिषे कदि न्छु ये कयो
 कना त्रै तिमिन भन्या राम चंद कन वन वाश मात्रे न गराया उन्का ४ व्या प्रावट्या कोठा सा वसि
 रुं राम देखि तमो छा छोरा हृत् लाई भय अया उन्का छे न राम चंद कला छे भन्या अत्यंत सा
 धु सत्ये वादि सवै का पियारा यस्तो राम लाई वन वाश गराया लोक ये चह हक्य भन्या न केरि
 राम विना ले मेरो प्राण रात्र शक्रा छे न भन्या हरा नि ई राम चंद कन राज्या देखि वाहि रामा त्रै

राम नपठाउं भनिरस्य कारले अनेक विंति गरि दशरथ ले रानिका दुवै पावसां हो समाई पदी भयाः
४२ तिके कैले महां क्रोध गरि भंदि भई रहे महां राज तयां जिको सत्पाछे न भन्या मक्या कया ग
हंला म वाचनु चाहि न रहे महां राज मैले ता तयां जिकन सत्पावादि ठान्या अवत पात्रिनर
कि होला हे माहां राज अव मैले यो प्राण राश्र कियेण विष खाई मरुं किया शो लाई मरुं
भनिरतिराजा वारंवार मुछाई दुई मै मा लोटतै मुदी जा स्ना भैर स्या राजा का मुखों जि रानि व
सिर स्या कित स अध्या को ठा मा हा ए स्य कारले रात विरां ताई विहायो पूर्व दि सा मा हां सूर्य को ते
जरा तो देखियो तां हां तिरा ज्य का लोक सवै ले राम चडले राज्या भिषे कलि दा हे न जां उं ला भनि
न निदा यिर स्या का चार प्रहर रात्रि विताउ ना कन चार युग वित्या मौं जिं ठानि क श्वेला मां हां हे न
पां उं ला भनिर स्या का वेला मां हां तां हां योर अने कै बुछा बुछि वाल य त ध्या रि व ठि र क य रा लाई